प्रतिलेखन संख्या 30

महोदय, प्रशासन का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह सतर्क रहे और अधिकारी लोग अपने को निष्पक्ष रखें। किंतु जो जनता के अंदर एक गिरावट आती जा रही है वह भी एक देखने की बात है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि सरकार कोई ऐसा प्रयत्न करे जिससे कि भ्रष्टाचार को रोकने के लिए जो लोगों का नैतिक स्तर ऊँचा होना आवश्यक है उसको ऊँचा किया जा सके। उसके लिए जो भी वह कर सके, करे। मुझे कहना तो बहुत कुछ था लेकिन चूँकि मेरा समय समाप्त हो गया है, मैं अब और कुछ नहीं कहूँगा।

महोदय, इसलिए मैं माननीय रक्षामंत्री महोदय का ध्यान इतिहास की उस चेतावनी

की ओर दिलाना चाहता हूँ कि हिमालय की चोटी पर जिसका अधिकार रहा है,

उसका गंगा और यमुना के मैदान पर भी अधिकार रहा है। हम इस आशा में नही

रह सकते कि हम दुश्मन को हिमालय की चोटी से उतरने दें और फिर मैदान में

उसका मुकाबला करें। मुझे याद है कि कुछ वर्ष पहले प्रधानमंत्री जी ने बड़ी दृढ़ता

के साथ यह कहा था कि हम हिमालय को दहेज के रूप में नहीं दे देना चाहते

और यह नहीं कहना चाहते कि साहब, आप टहलते हुए यहाँ आ जाइए। हम नहीं

चाहते कि वहाँ पर कोई मुकाबला ही न हो। मैं समझता हूँ कि अगर किसी भी

सैनिक अधिकारी के दिमाग में अभी तक यह भावना है कि हम हिमलाय की ऊँची

चोटियों को छोड़कर नीचे मैदान में आकर युद्ध लड़ेंगे, तो उनको भ्रम में नहीं रहना

चाहिए। यह एक घातक बात होगी, एक आत्मघाती नीति होगी। अगर एक बार चीन

का हिमालय की चोटियों पर कब्जा हो गया, तो चाहे वह बाद में नीचे हम पर

हमला न भी करे, किंतु वहाँ से हम उस को कभी नहीं हटा सकेंगे। इसलिए इस

संबंध में स्पष्ट निर्णय किया जाना चाहिए।

इसके बाद मैं मध्यवर्ती क्षेत्र के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। पिछली बार जब चीन

ने बड़े पैमाने पर आक्रमण किया था, तो लद्दाख में और पूर्व में नेफा के इलाके में

किया था। मध्यवर्ती क्षेत्र में, मिडिल सेक्टर में, लड़ाई नहीं हुई थी। लेकिन मेरा

अपना अनुमान है, और बहुत–से लागों को इस बात की आशंका है, कि अगर अब

कभी चीन ने दोबारा हम पर आक्रमण किया, तो वह मिडिल सेक्टर में करेगा। इसके

कई कारण मालूम पड़ते हैं।